थियोसॉफिकल सोसायटी

संस्थापक : - हेलिना ब्लावाटस्की और कर्नल 'हेनरी स्टील अल्काट'
स्थापना : - 17 नवंबर 1875
स्थल : - न्यूयार्क

थियोसॉफिकल सोसायटी एक अंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक संस्था है। थियोसोफी ग्रीक भाषा का शब्द है। 'थियोसोफी' दो शब्दों के मेल से बना है, थियो' तथा 'सोफी '। थियो' का अर्थ है 'ईश्वर' और 'सोफी' का अर्थ है 'ज्ञान' अर्थात थियोसोफी का अर्थ हुआ 'ब्रह्म ज्ञान'। इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम आईब्लिंकस ने इसवी सन 300 के आसपास किया था। थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना रूस में रहने वाली मैडम 'हेलिना ब्लावाटस्की' और अमेरिका में रहने वाले कर्नल 'हेनरी स्टील अल्काट' ने 17 नवंबर 1875 को न्यूयॉर्क में की। सन 1879 मैं सोसाइटी का मुख्य कार्यालय न्यूयॉर्क से मुंबई लाया गया। सन 1886 में उसका प्रधान कार्यालय चेन्नई में स्थापित कर दिया। 'एनी बेसेंट' 1889 में थियोसॉफिकल सोसायटी से जुड़ी। 1907 में वह सोसाइटी की अध्यक्षा बनी। एनी बेसेंट एक महान विभूति थी। उनका वेदों उपनिषदों और शिक्षा में गहरा विश्वास था। भारत को वह मुक्ति एवं प्रबोधन की भूमि मानती थी। बाद में उन्होंने भारत को ही अपना राष्ट्र और स्थाई घर बना दिया। जब थियोसॉफिकल सोसायटी भारत में आई प्रारंभ में उन लोगों ने आर्य समाज के साथ मिलकर कार्य किया। बाद में वे अलग रहे। परंतु स्वामी जी के प्रति उनकी श्रद्धा वैसे ही बनी रही।

थियोसोफिकल सोसायटी के कार्य में तीव्रता लाने का श्रेय एनी बेसेंट को दिया जाता है। भारतीय समाज में व्याप्त बाल विवाह, जातिभेद, विधवा पुनर्विवाह पर निर्बंध जैसी कई कुप्रथाओं पर उन्होंने आवाज उठाकर आधुनिक शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। उन्होंने शिक्षा, दर्शन एवं राजनीति पर जोर शोर के साथ कार्य किया।

वैचारिक बिंदु : -

1) थियोसॉफिकल सोसायटी के अनुसार चिंतन - मनन, प्रार्थना एवं श्रवण के माध्यम से ईश्वर एवं व्यक्ति के अंतरण के मध्य एक विशिष्ट संबंध की स्थापना की जा सकती है।
2) थियोसोफ़िकल सोसायटी में पुनर्जन्मा कर्म, जैसी हिंदू मान्यताओं को स्वीकार किया और उपनिषद, सांख्य, योग एवं वेदांत दर्शन उनसे प्रेरणा ग्रहण की।
3) इसमें जाति प्रजाति, रंग एवं लालच जैसे भेदों से ऊपर उठकर विश्व बंधुत्व का आवाहन किया।
4) सोसायटी प्रकृति के अव्याख्यायित नियमों और मानव के अंदर छुपी हुई शक्ति की खोज करना चाहती थी।
5) सोसाइटीने हिंदुओं के प्राचीन सिद्धांतों दर्शनों का नवीनीकरण किया और उनसे संबंधित विश्वासों को मजबूती प्रदान की।
6) आर्य दर्शन धर्म का अध्ययन तथा प्रचार किया।
7) सोसाइटी का मानना था कि उपनिषद परमसत्ता ब्रह्मांड व जीवन के सत्य का उद्घाटन करते हैं।
8) सोसाइटी ने आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विमर्श के अतिरिक्त अपने अनुसंधान तथा साहित्यिक गतिविधियों द्वारा हिंदुओं के जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
9) इसने हिंदू धर्म ग्रंथों का प्रकाशन एवं अनुवाद भी किया।

By Dr. Sangita Chitrakoti

10) सोसाइटी ने सुधारों को प्रेरित किया उन पर कार्य करने के लिए शिक्षा नीतियां तैयार की
11) सोसाइटी में पाश्चात्य प्रबोधन के माध्यम से हिंदू आध्यात्मिक ज्ञान की खोज करनी चाही।

थियोसॉफिकल सोसायटी के कार्य :: -

नारी को शोषण से मुक्त करना : - एनी बेसेंट महिला अधिकारों की समर्थक थी। उन्होने नारी को शोषण से मुक्त करने का प्रयास किया। नारी को ऊपर उठाने की कोशिश की। उस समय नारी कई दृष्टि से शोषित थी। समाज में सती प्रथा, बाल विवाह, विधवाओं की समस्या अशिक्षा आदि कई समस्याएं थी। एनी बेसेंट बालविवाह को खत्म कर देना चाहती थी क्योंकि बालविवाह के दुष्परिणाम अनेक थे। अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक बिमारियाँ, अकाली बुढ़ापा, स्त्री शक्ति का ह्रास, अज्ञान इत्यादि । एनी बेसेंट ने विवाह की आयु बढ़ाने का समर्थन किया।

शिक्षा का प्रसार : - एनी बेसेंट सामाजिक रूप से अस्वीकार्य वर्गों को शिक्षित कर उनकी परिस्थितियों में सुधार लाना चाहती थी। इसलिए 'एनी बेसेंट' ने अनेक शिक्षा समितियां स्थापित की और आधुनिक शिक्षा की वकालत की। भारत में शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिए 1898 में बनारस में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की जो मदन मोहन मालवीय के प्रयासों से 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय बन गया।

जातिभेद दूर करना : - थियोसॉफिकल सोसायटी ने जाति एवं अछूत व्यवस्था के उन्मूलन का भी प्रयास किया। उन्होंने हाशिए के समाज को सामाजिक स्वीकार्यता दिलाने के लिए सच्चे मन से कार्य किया। सामाजिक रुप से और अस्वीकार्य वर्गों को शिक्षित कर उनकी परिस्थितियों में सुधार लाने के लिए प्रयत्न किया।

विकृत रूढ़ि परंपराओं का विरोध : - समाज में प्रचलित अज्ञान, अंधविश्वास, पाखंड, आडंबर कर्मकांड के कारण समाज अधोगति की ओर जाता है इसलिए क्यों थियोसोफ़िकल सोसायटी ने अनिष्ट प्रथाओं रूढ़ियों का प्रखर विरोध किया और समाज को जागृत करने का प्रयास किया।

विश्व शांति का संदेश : - विश्व शांति की आवश्यकता सभी को है और आज वह और तेज हो गई है। विश्व शांति के लिए भाईचारे की भावना सबसे पहले जरूरी है। परस्पर हित चिंतन विश्व शांति की दशा में महान कदम होगा। थियोसॉफिकल सोसायटी ने विश्व शांति का संदेश दिया। विश्वशांति के लिए उन्होंने पूरे विश्व में व्यापक कार्य किया। विश्व में शांति और सुव्यवस्था स्थापित करने के लिए वह कार्यरत रही। उन्होंने विश्व को आध्यात्मिकता की ओर खींचा और ऋषि मुनियों के दिव्य जीवन संदेश उन्होंने पूरे विश्व में प्रसारित किए।

निष्कर्ष : - इस प्रकार एनी बेसेंट ने पाश्चात्य भौतिकवादी सभ्यता की कड़ी आलोचना की और प्राचीन हिंदू सभ्यता को श्रेष्ठ सिद्ध किया। उनके अनुसार "हिंदू धर्म के बिना भारत का कोई भविष्य नहीं है। हिंदू धर्म वह जमीन है जिस पर भारत की जड़े जमी हुई हैं और उससे अलग होने पर भारत वैसा ही हो जाएगा जैसे किसी पेड़ को उसके स्थान से उखाड़ दिया जाए"। धार्मिक शैक्षणिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में उन्होंने राष्ट्रीय पुनर्जागरण का कार्य किया। भारत के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता आवश्यक है इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने 1916 में होम रूल

आंदोलन संगठित करके उसका नेतृत्व किया। थियोसॉफिकल सोसायटी के विचारों को प्रसारित करने के लिए 'द न्यू इंडिया' और 'कॉमन विल' नामक दो पत्रों का प्रकाशन भी उन्होंने किया।

By Dr. Sangita Chitrakoti